

# अमर उजाला

PAGE NO 12 : TOP RIGHT

## वसंतोत्सव.. सुर, ताल और नृत्य का संगम

नृत्य और  
संगीत की  
प्रस्तुतियों ने  
दर्शकों को बांधा

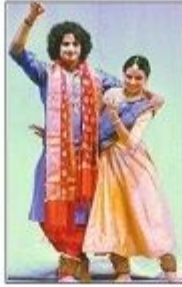
अमर उजाला ब्यूरो

बरेली। एसआरएमएस के सांस्कृतिक केंद्र रिद्धिमा में शनिवार शाम को आयोजित वसंतोत्सव में सुर और संगीत की पहली महफिल सजी। नृत्य और संगीत की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने दर्शकों को बांधे रखा।

दोप प्रखवलन के बाद डॉ. ऊषा त्रिपाठी ने अपनी शिष्याओं के साथ सरस्वती वंदन, या कुंरेंदु तुषर हार भवत्स... की प्रस्तुति दी। मणिपुत्रा इंद्र इंद्ररडल ने, सुनो सजना पपीहे ने, गीत की प्रस्तुति दी और फिर डॉ. अंबाली महाराज एवं डॉ. पंकज शर्मा ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी।

लागू चुनरी में दाव... गीत पर हुई भरतनाट्यम की प्रस्तुति पर दर्शकों ने खूब तालियां बजाईं। आनंद मिश्रा और शिव शंभु कन्नू ने कलया एवं हास्योपनिषद् के जरिये बनारस घराने की संस्कृति से परिचय कराया। इसके बाद दिल्ली से आए बासु कृष्ण महाराज और वैभव कृष्ण महाराज ने कथक की प्रस्तुति दी। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति ने देर तक दर्शकों को बांधे रखा। अमृत मिश्रा एवं डॉ. पंकज शर्मा ने भी कथक पर प्रस्तुति दी।

संगालन डॉ. कविता अरोड़ा ने किया। बनारस घराने की प्रकृति चौधरी ने होली गीत, खेलत है गिरधारी... पर भरतनाट्यम की प्रस्तुति देकर होली की वाद दिला दी। इससे पूर्व राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति और सचिव अदित्यमूर्ति ने दो दिवसीय कला प्रदर्शनी के विनोदों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इसमें अंशिका आयाल और कर्मी शुक्ल प्रथम रहे।



रिद्धिमा में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार। अमर उजाला

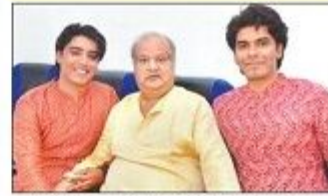
## बनारस घराने की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं 14वीं पीढ़ी के बासु और वैभव

बरेली। बनारस घराने की परंपरा आगे बढ़ा रहे 14वीं पीढ़ी के बासु कृष्ण महाराज और वैभव कृष्ण महाराज पांचवीं कला की पढ़ाई के बाद ही कथक सीखने लगे थे। उनका कहना है कि सरकार को अपनी सांस्कृतिक विरासत बचाने के लिए इसे बढ़ावा देने की जरूरत है।

बासु और वैभव कृष्ण महाराज शनिवार को रिद्धिमा में आयोजित वसंतोत्सव कार्यक्रम में प्रस्तुति देने पहुंचे थे। अमर उजाला से बातचीत में बासु और वैभव ने बताया कि वे दोनों सगे भाई हैं और बनारस घराने की 14वीं पीढ़ी हैं। 13वीं पीढ़ी के असोक कृष्ण महाराज उनके ताऊ हैं, जिनके साविध्य में वे कथक कला को आगे बढ़ा रहे हैं। पांचवीं तक पढ़ाई के बाद ही पिता और ताऊ ने उन्हें कथक में पारंगत करने का निर्णय लिया और फिर उन लोगों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने कहा कि नृत्य अब शौक बन गया है, जिसके चलते युवाओं में सीखने की ललक कम दिखाई देती है।

सरकार को इसे प्रोत्साहन देने के लिए लगातार आभोजन कराने चाहिए ताकि युवा अपनी संस्कृति से

पांचवीं के बाद पढ़ाई छोड़कर सीखा कथक, योले-सरकार को इसे बढ़ावा देने की जरूरत



अपने ताऊ के साथ बासु और वैभव कृष्ण महाराज।

जुड़ाव महसूस करें। कहा, सोशल मीडिया भी कलाओं को अन्देखी कर रहा है। तमाम एप चल रहे हैं, जिन पर नृत्य के वीडियो बनाकर यूवा पोस्ट करते हैं लेकिन ये सिर्फ 30 सेकेंड का होता है और इतने समय में तो सुर, लय, ताल ही टीक से नहीं मिल पाते। ब्यूरो